D.El.Ed. IInd Sem

Subject :- S.St.

Topic :- लघु एवं कुटीर उद्योगों का महत्त्व

भारतीय अर्थव्यवस्था में लघु एवं कुटीर उद्योगों के महत्त्व में निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है —

1. इन उद्योगों में लगभग 18 करोड़ व्यक्ति रोजगार में लगे हुए हैं।
2. ये उद्योग आय व सम्पत्ति के सम वितरण में सहायक हैं।
3. श्रमप्रधान उद्योगों के कारण श्रम पूँजी से भी इनका संचालन संभव है।
4. लघु एवं कुटीर उद्योगों में ही कृषि में लगे अतिरिक्त श्रम को स्थानान्तरित किया जा सकता है।
5. ये उद्योग विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था की स्थापना करते हैं, जो आज के युग की माँग है।
6. इन्हें उपभोक्ताओं की रुचि के अनुसार समायोजित किया जाता है।
7. ये उद्योग औद्योगिक अशान्ति हड़ताल, तालाबन्दी आदि से मुक्त रहते हैं और सहानुभूति, स्वतन्त्रता, सहकारिता, एकता तथा सहयोग की भावना को जन्म देते हैं।
8. ये उद्योग विदेशी विनिमय अर्जित करने में अत्यन्त सहायक सिद्ध हुए हैं।
9. इन उद्योगों को चलाने के लिए विशेष शिक्षा तथा प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती।
10. कुटीर एवं लघु उद्योगों का माल अधिक टिकाऊ तथा कलात्मक होता है।

Scanned with CamScanner